यथेपितं।

जयाह चैनं धर्मात्मा विधः सत्यपराज्ञमः। ज्ञालैवं सच वनेऽय पुत्रार्थे भरतर्षमः।

सन्तानार्थं महाभाग भार्यासु मम मानदः। पुत्रात्यर्कार्थकुण्यानृत्याद्वितु मर्दिषः।

एवमुक्तः स तेजस्तो तं तथित्युक्तवानृष्ठिः। तस्तै स राजा स्त्रां भार्या सुदेश्यां प्राहिणोत्त्तरः।

त्रात्रं स तेजस्ति तं तथित्युक्तवानृष्ठिः। तस्ते स राजा स्त्रां भार्या सुदेश्यां प्राहिणोत्त्तरः।

तस्त्रं तस्त्रं नम्त्रा न सा देवो जगाम ह। स्त्रान्तु धानियिका तस्त्रे दृद्धाय प्राहिणोत्त्तरः।

तस्त्रं वाचीवदादीन्प ग्रुट्रयोनाद्यिस्तरः। जनयामास धर्मात्मा पुत्रानेकाद्मेव हः।

काचीवदादीन्पुत्रं स्त्रान्त्रदृष्टा स्त्रं निधान नम्प्रं स्त्रान्त्रयान्त्रयान् स्त्रान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्यान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान

द्रत्याद्पर्व्वणि सम्भवपर्वणि भीग्रसत्यवतीसंवादे चतुर्राधिकमतोऽध्यायः॥ १०४॥
भोग्नजवाच। पुनर्भरतवंमस्य हेतुं सन्तानद्रद्वये। वच्यामि नियतं मातस्तवो निगदतः मृणु।

ब्राह्मणा गुणवान् किंद्यद्वनेनोपिनमन्त्रता। विचित्रवीर्य्यचेत्रेषु यः समृत्याद्येत्रजाः।

वैग्रम्पायनजवाच॥ततः सत्यवती भीग्नं वाचा संसज्जमानया । विहसन्ताव सबीष्ठमिदं वचनमन्नवीत्।

सत्यमेतन्महाबाहे। यथावदिस भारत। विश्वासात्ते प्रवच्यामि सन्तानाय कुलस्य नः।

न ते ग्रन्थमनास्थातुमापद्भन्तं तथाविधं। त्रमेव नः कुले धर्मास्त्रं सत्यं तं परा गतिः।

तस्मान्त्रिग्रम्य सत्यं मे कुरुष्य यदनन्तरं। धर्मयुक्तस्य धर्मार्थं पितुरासीत्तरी मम।

सा कदाचिदहं तच गता प्रथमयीवनं। श्रथधर्मविदां श्रेष्ठः परमर्षिः पराग्ररः। श्राजगाम तरीं धीमास्त्रियन्यमुनं। नदीं।

स नार्थ्यमाणो यमुना मामुपेत्यात्रवीत्तदा। सान्वपूर्व्य मुनिश्रेष्ठः कामात्ता मधुरं वचः।
तमहं शापभीता च पितुर्भीता च भारत। वरैरसुलमेहका न प्रत्याख्यातुमुत्सहं।
श्रिभिक्ष्य स मां बाला तेजसा वश्रमानयत्। तमसा लेकिमादृत्य नीगतामेव भारत।
मत्यगन्धा महानासीत्पुरा मम जुगुप्तितः। तमपास्व श्रुमं गन्धिममं प्रादात्स मे मुनिः।
ततो मामाह स मुनिर्गर्भमृत्सृज्य मामकं। दोपेऽ ख एव सरितः कन्यव लं भविष्यितः।
पाराश्र्यो महायोगी स बस्दव महानृषिः। कन्यापुत्ता मम पुरा दैपायन दति श्रुतः।
था यस्य वेदायतुरस्वपसा भगवानृषिः। लोके यासलमीपेदे कार्ष्णात् हण्णतमेव च।

8468